IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्य प्रदेश के मध्यकालीन व्यापारिक स्थलों का ऐतिहासिक महत्व

Mubeen Khan

Senior Research Fellow (UGC-JRF)

M.G.C.G.V.V.Chitrakoot Satna (M.P.)

सार संक्षेप – प्राचीन काल मे मध्यप्रदेश वाणिज्य के उन्नति के कारण विश्व का एक प्रमुख केन्द था। यहां उर्वर भूमि, उपयुक्त जलवायु, एवं प्राकृतिक साधनों के कारण बहुत अधिक पैदावार होती थी तथा खनिज पदार्थों की भी कमी नही थी। मध्यकाल तक मध्य प्रदेश से निकलने वाले मार्गो मे काफी परिवर्तन हो गया था। उज्जैन तथा विदिशा के महत्व मे काफी परिवर्तन हो गया था। तथा विदिशा के स्थान पर धार का प्रभाव एवं महत्व बढ गया था। सल्तनत तथा मुगलकाल मे मध्य प्रदेश क्षेत्रीय शक्ति तथा कुछ समय के लिए परम्परागत शासकों तथा सुल्तानों के समय अपना आर्थिक विकास कर सका लेकिन यह विकास संगठित नही था जैसा कि दक्षिण तथा उत्तर भारत के अन्य राज्य संगठित थे। यहां के शासको एवं राजवंशों ने भी व्यापार को प्रोत्साहन दिया। संगठित व्यापार की दृष्टि से यहां के व्यापारिक स्थलों के विस्तृत अध्ययन से जाना जा सकता है जिसको इस प्रकार से वर्णित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द – मध्यकाल, मध्य प्रदेश, व्यापार।

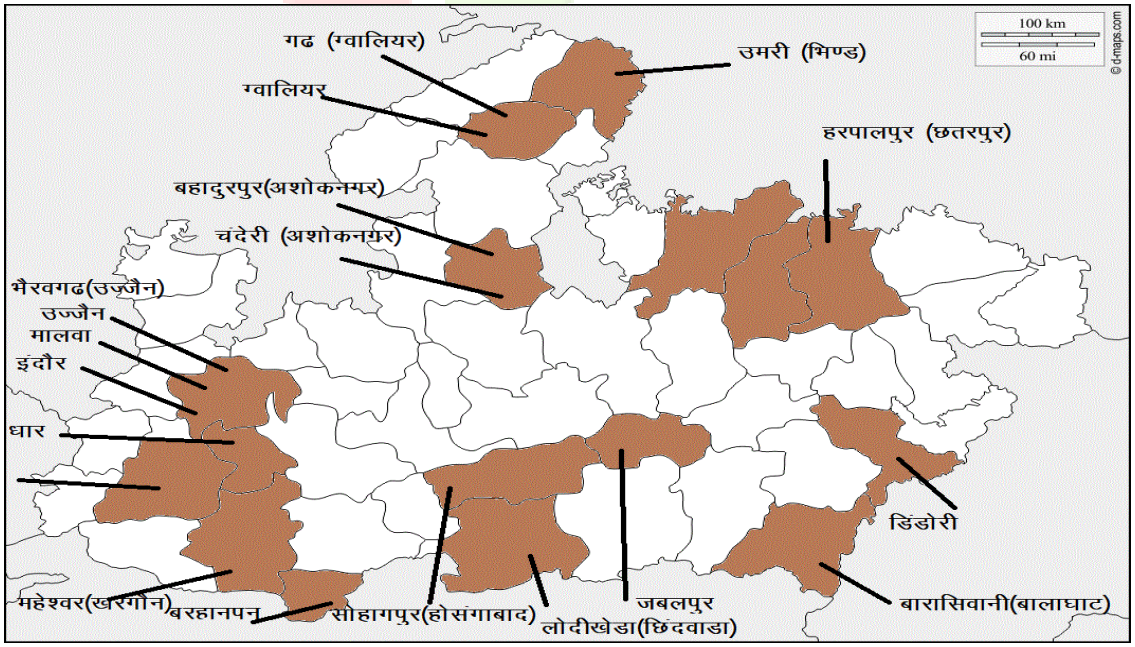

बुाहानपुंर –बुरहानपुर का प्रारम्भिक उल्लेख करते हुए अबुल फजल ने लिखा है कि यहां अच्छे कपड़े बुने जाते हैं। इसका उल्लेख ट्रैवरनियर द्वारा लिखित **ट्रैवल्स इन इंडिया** नामक पुस्तक में भी है। जिससे बुरहानपुर क्षेत्र के विगत काल के समृद्धिशाली वस्त्रोद्योग तथा अन्य संबद्ध उद्योगों पर पूरा–पूरा प्रकाश पड़ता है। ट्रैवरनियर ने लिखा है इस नगर में बड़े पैमाने पर व्यापार किया जाता है और बुरहानपुर तथा सम्पूर्ण प्रांत में अत्यन्त पारदर्शक मलमल काफी बड़ी मात्रा में बुनी जाती है जो फारस, टर्की, पोलैण्ड, अरेबिया और ग्राडकैरो तथा अन्य स्थानों को निर्यात की जाती है।

निमाड़ – निमाड़ के रेशम उद्योग के संबंध में **डोबर** ने अपनी पुस्तक **मॉनोग्राफ आन दि सिल्क इंडस्ट्री ऑफ सेंट्रल प्रॉविन्सेस** में लिखा है निमाड़ जिले में रेशम उद्योग के साथ जरी के निर्माण का एक बेजोड़ तथा अधिक प्रसिद्ध उद्योग हैं। इसमें बुरहानपुर और खंडवा समेत आसपास का इलाका आता है। इन्हें रेशमी वस्त्रों से बुना जाता है। यह मिश्रित उद्योग अपने आप में एक विशिष्ट उद्योग है। वास्तव में यूरोप में हाथ के फीते बनाने के उद्योग की तरह इस उद्योग को भी आज के उत्कृष्ट मशीनी तथा व्यावहारिक अर्थव्यवस्था के दिनों में धक्का लगा है।

इंदौर –स्वतंत्रता के पूर्व तत्कालीन इंदौर राज्य के अधिकांश ग्रामों में सामान्य वस्त्र तथा कंबलों का उत्पादन होता था। जबकि कपड़ों की रंगाई **गौतमपुरा** तथा **सांवेरा** में की जाती थी। उस समय इंदौर राज्य में हथकरघा बुनाई का कार्य इंदौर, देपालपुर, हातोदा तथा गौतमपुरा में उन्नत स्थिति में था मुख्यतः पगड़ी, धोती और लगड़े तथा पाट बनाए जाते थे। हथकरघा बनाई के सहायक उद्योग के रूप में हाथ रंगाई और छपाई उद्योगों ने भी उन्नति की थी। **इंदौर तथा गौतमपुरा का रंगारा समाज** मुख्यतः इस उद्योग में लगा हुआ था।

उज्जैन –उज्जैन में प्रथम कपड़ा मिल 1991 में प्रारंभ की गई थी जो नजीर अली मिल्स के नाम से जानी जाती थी। यह भूतपूर्व ग्वालियर रियासत में प्रथम तथा संपूर्ण केंद्रीय भारत में द्वितीय मिल थी ऐसे उद्योग प्रारंभ करने के लिए शासन फर्मो को विशेष रियायत देता था इसके अंतर्गत निःशुल्क भूमि, सीमा शुल्क में छूट तथा दीर्घकालीन कर्ज दिया जाता था वहा दो आने से लेकर 60 रू0 प्रतिमाह मजदूरी पर औसतन 500 व्यक्तियों को रोजगार दिया जाता था। इसमें एक यूरोपियन इंजीनियरिंग मिल का प्रभारी था जिसमें औसतन 75 मन सूत प्रतिदिन काता जाता था

मालवा –मुगल सूबों में गुजरात के बाद मालवा औद्योगिक दृष्टि से प्रथम श्रेणी का था। अबुल फजल ने लिखा था कि यहां महीन सूत के वस्त्र बनाए जाते थे किंतु एक अन्य पुस्तक से विगत काल में सिरोज के वस्त्र उद्योग की भव्यता की पूरी जानकारी मिलती है। सिरोज में एक प्रकार की मलमल बनाई जाती थी। जो इतनी महीन होती है कि उसे शरीर पर पहन लेने पर भी त्वचा इस पर दिखाई देती थी। मानव शरीर पर कुछ पहना ही ना हो व्यापारियों द्वारा उसका निर्यात करने की अनुमति नहीं थी। मुगल सूबेदार उसे सम्राट के अंतःपुर के लिए तथा प्रधान मुसाहिबों के लिए भेज देता था। इसी कपड़े से सुल्तान और बड़े–बड़े संबंधों की पत्नियां गर्मी में अपने लिए कमीज तथा वस्त्र बनाती थी।

सोहागपुर (होशंगाबाद) –स्वतंत्रता पूर्व होशंगाबाद जिले का सोहागपुर एक महत्वपूर्ण केंद्र था। जहां के खत्री, मुसलमान व्यापारी रंगाई तथा छपाई के लिए अहमदाबाद से मिल के बने वस्त्र पहनते थे। निर्यात के लिए अच्छी किस्म के वस्त्रों में विदेशी रंगों का प्रयोग किया जाता था। हरदा और टिमरनी भी ऐसी स्थान थे जहां रंगाई का कार्य किया जाता था। इस प्रयोजन के लिए ऑल या मदार पौधे तथा हर्र के वृक्ष का भी प्रयोग किया जाता था।

महेश्वर –आज महेश्वर अपनी खूबसूरत साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। यहां लगभग 2500 हथकरघे कार्यरत है। महेश्वर में बनाने वाली साड़ियों को होलकर साम्राज्य की प्रसिद्ध महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने संरक्षण व सम्मान दिया यहां की साडी निर्माण पर आज भी उनके जमाने में स्थापित परंपराओं की छाप है। महेश्वर के शिल्पी साड़ी बुनाई में अभी भी परंपरागत तरीके अपनाते हैं।

चदेरी –राज्य के अशोकनगर जिले के तहत आने वाला चंदेरी कस्बा अपने साड़ियों के लिए मशहूर है। यहां की साड़ियां सबसे हटकर इसलिए है क्योंकि ताने को धोकर उसका गोंद निकाले बिना ही रंगाई की जाती थी। जिसमें उसके अतिरिक्त चमक नजर आती है जो झिलमिलाहट पैदा करती है इसलिए यहां की साड़ियां धूप–छांव भी कहलाती थी।

डिंडोरी –डिडोरी जिला ऊनी और सूती वस्त्र निर्माण का एक प्रमुख केंद्र है यहां की बनी धोती और सूती चौकडी कपड़े की विशेष मांग है इस इलाके में प्राचीन करघों से बुनाई का काम होता है डिंडोरी के सरवाही, पिंण्डरूखी, बजाग आदि कई स्थान बुनाई के मुख्य केंद्र है। यहां बैगा साड़ी, धोती, सादी बसंती किनारा साड़ी, चकघटिया साड़ी, चौखाना बैगा साड़ी, मूंगी किनारा के औचा प्रतापशाही, भौराही और पाटी के औचा बुने जाते। इसके अलावा यहां सादा लट्ठा, चादर व खादी के वस्तुओं का निर्माण भी होता है। इसकी दूर दूर तक मांग थी।

सौंसर और लोधीखेड़ा –छिंदवाडा जिले में सौंसर और लोधीखेड़ा बुनाई के प्रमुख केंद्र है कभी यहां पर साढे आठ गज की साड़ी विवाह के लिए बुनी जाती थी। साथ ही नाइक और राजस्थान से आकर बसे लोगों के लिए भी लेहरा भी बुना जाता था पारंपरिक साड़ियां जिन्हें पुआरी कहा जाता था, बुनी जाती थी। आज यहां का वस्त्र उद्योग अंतिम सांसे ले रहा है।

वारासिवनी –बालाघाट जिले का **वारासिवनी** अपनी महीन बुनाई के लिए विख्यात था। यहां की रेशमी साड़ियां काफी प्रसिद्ध थी। वर्तमान में 10 से 12 हथकरघे कार्यरत हैं।

हरपालपुर (छतरपुर) –छतरपुर जिले का हरपालपुर कस्बा मोटे सूत की बुनाई का महत्वपूर्ण केंद्र है। इसके अलावा नजदीक ही सिरसेड गांव है जहां 35 बुनकर खादी और सूती जाजम का निर्माण कर रहे है। हरपालपुर में राजपूत कॉलोनी में काफी संख्या में बुनकर हैं जो चौकड़ी की चादरें, लटठा, जाजम और रजाई की खोल का कपड़ा बुनते हैं

भैरवगढ़ –उज्जैन का भैरवगढ़ कस्बा वस्त्र निर्माण का पुराना केंद्र था। यहां पर वस्तुओं को छाप पद्धति से तैयार किया जाता था। यहां तैयार होने वाले वस्त्रों में चादर चुन्नी और ड्रेस मैटेरियल जैसे रंग बिरंगे वस्त्र होते थें। शिप्रा नदी के तट पर स्थित कुल डेढ़ सौ परिवार ब्लॉक प्रिंटिंग अलीजरीन और बंधेज के जरिये रंग–बिरंगे बस्त्र तैयार करते थे।[19] खासतौर पर यहा बनी चादरों कि देश भर में मांग रहती थी।

नरैला (सिवनी) : जबलपुर–नागपुर राजमार्ग मे स्थित यह क्षेत्र वर्तमान सिवनी जिले मे स्थित था। यह स्थान **लोहा बनाने के लिये प्रसिद्व** था। लोहा तैयार करने का कार्य मुख्यता यहां के अफगान निवासी करते थें।[22] और यह **अंग्रेज शासित इलाकों को निर्यात किया जाता था।**

नरवर शहर –कनिंघम महोदय ने अपने विवरण मे **नरवर मे कच्चे लोहे का उल्लेख किया** है। जो निकट के गावों मे बडी मात्रा मे गलाया जाता था और उससे लोहे की चीजें बनाई जाती थीं।

सन्दर्भ –

- निगम, एस0एस0– 'मालवा की हृदय स्थली अवंतिका', उज्जैन, 1968 ई0
- नवनीश पंकज– 'भोजकालीन भारत' सु0प्र0, इंदौर, 1964 ई0
- निर्मल, रमेश– 'अनादि उज्जयिनी' अवंति प्रकाशन, मुम्बई, 1992 ई0
- पाटिल, दे0स0– 'माण्डू भा0पु0 सर्वे' नई दिल्ली, 1982 ई0
- रायजादा, अजीत– इंदौर पुरातत्व संग्रहालय' भोपाल, 1992 ई0
- रायजादा, अजीत– 'उज्जयिनी पुरातत्व संग्रहालय' भोपाल, 1992 ई0
- रघुवीर सिंह– 'मालवा में युगान्तर', मध्य भारत हि0सं0, इंदौर 1938 ई0